स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

भारतीय डाक
India Post

डाक - एक्सप्रेस

संस्करण : नवंबर 2024

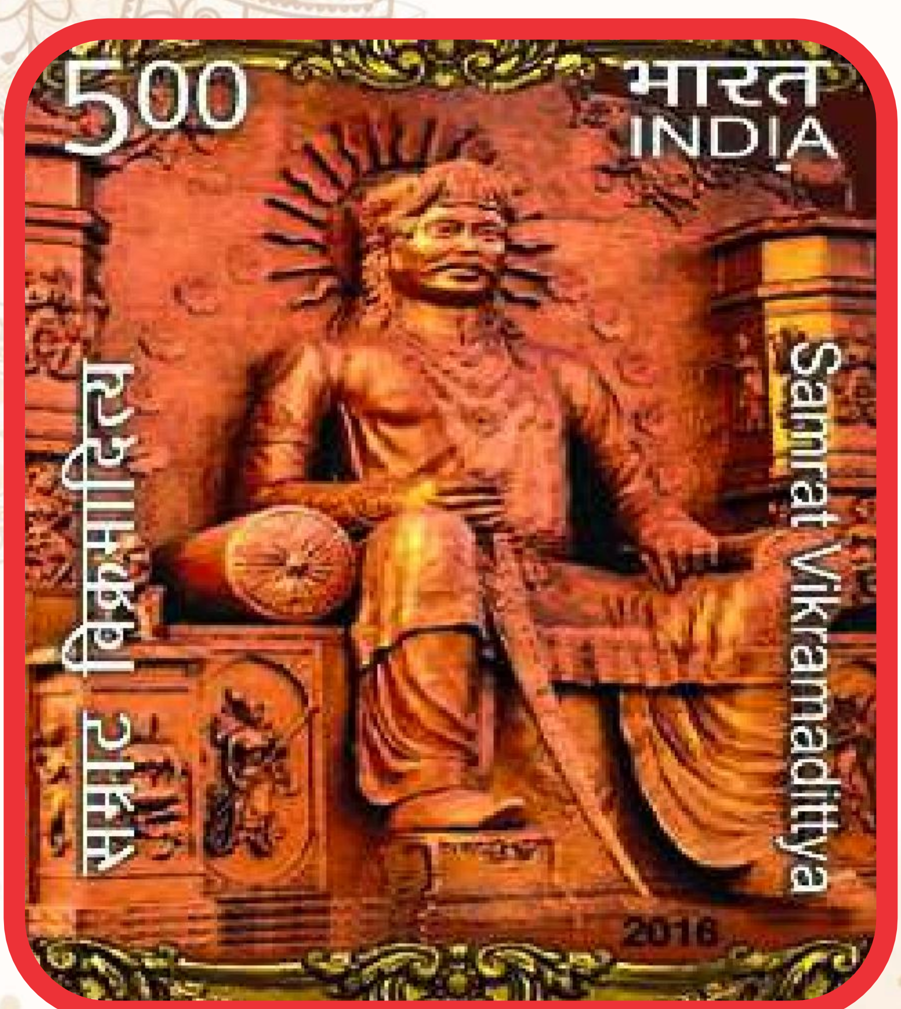

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमंडल भोपाल

डाक - एक्सप्रेस

शुभकामना संदेश

विनीत माथुर
मुख्य पोस्टमास्टर जनरल,
मध्यप्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल

भोपाल दिनांक 18 अक्टूबर, 2024

हर्ष का विषय है कि हिन्दी पखवाड़ा–2024 के समापन समारोह के अवसर पर ई–पत्रिका डाक एक्सप्रेस के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

जैसा कि हम सभी जानते है कि 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसलिए 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हमारा मध्यप्रदेश परिमंडल एक हिन्दी भाषी क्षेत्र है। यहाँ अधिकतम काम हिन्दी में ही किया जा रहा है। ऐसे में जनता तक अपनी बात पहुँचाने में हिन्दी एक सेतु का काम कर रही है।

इस पत्रिका के माध्यम से मेरी आप सभी से यह अपील है कि हम शासकीय कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें। हिन्दी में काम करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

पत्रिका में प्रकाशन हेतु बहुत ही अच्छे लेख और कविताएँ प्राप्त हुए है। मुझे सभी रचनाएँ बहुत उपयोगी और प्रभावशाली लगी। आशा करता हूँ कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ सभी के लिए बहुत उपयोगी होगी।

मै इस प्रयास के लिए सभी को बधाई देता हूँ एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

विनीत माथुर

(विनीत माथुर)

शुभकामना संदेश

पवन कुमार डालमिया,
निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय),
मध्य प्रदेश डाक परिमंडल, भोपाल

भोपाल दिनांक 18 अक्टूबर, 2024

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि ई –पत्रिका डाक–एक्सप्रेस के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के इस अंक में विविध विधाओं में रचनाओं एवं चित्रकारी के साथ–साथ परिमंडल की गतिविधियों को भी शामिल किया गया है जो सराहनीय है।

पत्रिका के माध्यम से बहुत अच्छे लेख और कविताएँ आप सभी तक पहुँचाने की कोशिश की गयी है। यह सभी रचनाएँ बहुत ही उत्कृष्ट और प्रभावशाली है।

यह पत्रिका परिमंडल के सभी सदस्यों को अपने मन के विचार, अपने मन की अंदर छुपी हुई साहित्यिक अभिरुचियों को व्यक्त करने का एक सही मंच प्रदान करती है।

पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मै सभी साथियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका पाठकों के लिए बेहद उपयोगी व रोचक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित ।

डालमिया

(पवन कुमार डालमिया)

डाक - एक्सप्रेस

डाक-एक्सप्रेस

संस्करण : नवंबर 2024

मध्यप्रदेश डाक परिमडंल भोपाल

संयोजक : मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, मध्यप्रदेश परिमडंल, भोपाल- 462012

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विनीत माथुर

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमडंल
भोपाल

मार्गदर्शक/संयोजक

श्री पवन कुमार डालमिया

निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय), मध्यप्रदेश परिमडंल
भोपाल

संपादन मंडल

श्री चन्द्रेश कुमार जैन

सहायक पोस्टमास्टर जनरल (लीगल/भवन एवं राजभाषा)
मध्यप्रदेश परिमडंल, भोपाल

श्रीमती अर्चना वर्मा

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री संजय कुमार दुबे

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री महेश कुमार प्रियानी

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

श्री सचिन कुमार यादव

सहायक लेखापाल
प्रधान अभिलेख कार्यालय एम. पी. मण्डल, भोपाल

अनुक्रमणिका

1 कविता : डाकघर की खिड़की
2 लघुकथा : स्कूल बैग
3 कविता : ऐ डाकिए तेरी यही कहानी
4 प्रसंग : गोल्डन हार्ट
5 कविता : माँ और मैं
6 कविता : पड़ाव उम्र का
7 राजभाषा एक परिचय
8 कविता : 'शायद नहीं'
9 लेख : पत्नी
10 कविता : अनवरत
11 यात्रा वृतांत : पचमढ़ी
12 कविता : भला कौन पूछता है ....
13 भारतीय डाक - कुछ रोचक तथ्य
14 लेख : समय की कवायद
15 कविता : भारतीय डाक विभाग
16 उपलब्धि / सम्मान
17 झलकियाँ
18 मिलेट्स केक बनाने की विधि
19 कलाकृति

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

के. एन. कुशवाह
डाक सहायक, मुख्य डाकघर ब्यावरा

कविता : डाकघर की खिड़की

भैया बहिना खाला आंटी, पापेजी आ जाओ,
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
पोस्ट कार्ड की सस्ती सेवा, सस्ते अंतर्देशीय,
विदेशी डाक सेवा उपलब्ध, यदि मित्र स्वजन परदेशी।
खुद आओ दूजों को भी लाओ सच्ची सेवा पाओ,
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
स्पीड पोस्ट के द्वारा राखी भेजो अपने भैया को,
ई–पोस्ट से शीघ्र संदेशा भेजो अपने सइयाँ को।
सीओडी की सेवा द्वारा घर बेठे सामान मँगवाओ,
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
आरडी–एसबी खाते पर, सभी भारतीयों का हक है,
बूंद–बूंद से घड़ा भराए, इसमे ना कोई शक है।
सुकन्या खाता खुलवा कर, बेटी का भविष्य बनाओ,
पिता का फर्ज निभाओ, डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
पीएलआई पॉलिसी मे मित्रे छुपी हुई सुरक्षा है,
हितग्राही के जन–धन मे, भारत शासन से रक्षा है।
आयकर मे छूट प्राप्त कर, अच्छा बोनस पाओ
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
गाँव गाँव के हर घर मे हमारे जीडीएस का पहरा है,
आरपीएलआई का तोहफा पा कर, खिला ग्रामीणो का चेहरा है।
कम प्रीमियम मे मिली सुरक्षा, इसका लाभ उठाओ,
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।
इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक व महिला बचत सम्मान,
भारत के अन्नदाता क्रषक, माँ बहिनो का स्वाभिमान।
शत प्रतिशत ग्यारंटी हमारी, अपना विश्वास जताओ,
डाकघर की खुल्ली खिड़की, अपने हाथ बढ़ाओ।

"भारतीय डाक विभाग"

सचिन मोढ़े
कार्यालय सहायक, मंडल कार्यालय
रेल डाक सेवा आयडी मंडल, इंदौर

लघुकथा : स्कूल बैग

चिड़िया आज सुबह से ही बहुत खुश है वह कब से शाम होने कर इंतजार कर रही है। मीनू के पिता प्यार से उसे चिड़िया कहकर पुकारते है। अभी शाम के सात बजे है पर मीनू के पिता अभी तक घर नही लौटे है। अब मीनू का एक–एक पल बरसों के समान बीत रहा है। आखिर आज मीनू का नया स्कूल बैग जो आने वाला है। स्कूल शुरू हुए एक माह बीत चुका है पर उसके पास स्कूल बैग न होने से उसे रोज विद्यालय मे डांट पड़ती है। मीनू के पिता ने आज पक्का वादा किया है कि वे आज किसी भी हालत मे उसके लिए एक नया स्कूल बैग लाएंगे। रात के दस बज चुके है आखिर मीनू सो गई। ग्यारह बजे मीनू के पिता घर पर आते है और मीनू को सोया हुआ देखकर उदास हो जाते है। क्योकि दिनभर बहुत प्रयास के बाद भी वे अपनी चिड़िया के लिए एक स्कूल बैग न ला सके। मीनू के पिता अत्यन्त गरीब परिस्थिति में जीवन यापन करते है। उनके लिए एक वक्त का भोजन जुटा पाना भी बहुत मुश्किल है ऐसे में वे एक नया स्कूल बैग कैसे लाये उन्हें समझ नही आ रहा है। पिता के आने की आहट सुन मीनू की नींद खुल गई और वह दौड़कर पिता के पास गई और बोली पिता जी आप मेरा नया स्कूल बैग ले आए ना वह कहॉ रखा है। यह सुन पिता की सांसे जैसे रूक गई गला सूख गया वे निशब्द हो गए। मीनू पिता के पैरों से लिपटी लगातार एक ही बात दोहरा रही थी पर पिता क्या बोलता। आखिर पूरे दिन मेहनत कर वह मात्र दस रूमाल ही बेच सका था और हर रूमाल पर उसका मालिक उसे मात्र पचास पैसे ही दिया करता था, इस कीमत पर वह एक नया स्कूल बैग आखिर कैसे लाता। आज उसे बहुत बेबस और लाचार होने का अहसास हो रहा है। यह सब वह चिड़िया को कैसे समझाए उसे समझ नही आ रहा है क्योंकि वह मात्र अभी पॉच साल की ही है। मीनू ने जब सर उठाकर पिता की ओर देखा तो उसे पिता की आंखो मे आंसू पोछते हुए बोली आप बैग नही ला पाए ना, पिता बोला नहीं और वह फूट–फूट कर रोने लगा। मीनू ने पिता की और देखा और उन्हें गले से लगाकर बोली आप इतनी सी बात पर क्यों रो रहे हो, मेरी सहेली के पास एक पुराना बैग है, में उससे ले लूंगी और जब बड़ी हो जाउंगी तब अपने लिए और आपके लिए भी एक नया बैग लाउंगी। अब आप मत रोओ और खाना खालों अपनी चिड़िया की ये बातें सुन पिता ने उसे गले से लगा लिया। ऐसी होती है बेटिंया।

शुभम कोरी
एमटीएस, जबलपुर परिक्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

कविता : ऐ डाकिए तेरी यही कहानी

डाकरवाने से निकलते ही लोगो के दिलो को जोड़ने,
लब्जों को रूबरू कराने, खोई आशाओं को जगाने।
चल पड़ती तेरी जुबानी है,
ऐ डाकिए तेरी यही कहानी है।

तुम ही खत लाते हो तुम ही खत पढ़ते हो,
और खुशियों वाले आसूं हमारी आंखों में भरते हो।
सामने ना होकर भी सामने वाली कहानी है,
ऐ डाकिए तेरी यही कहानी है।

कुछ पत्र लाते हो कुछ बचत योजनाएं लाते हो,
जो सुखद सुलभ हों वो त्वरित सेवाएं लाते हो।
जन जन तक ये खबर सुनानी है,
ऐ डाकिए तेरी यही कहानी है।

महिलाओं को उनका हक दिलाना,
सुकन्या जैसी योजनाओं से उनका भविष्य बनाना।
सबके दिलों पर तेरी निशानी है,
ए डाकिए तेरी यही कहानी है।

कलाकृति, स्मारक डाक टिकट तुम्हारे विशेष हैं,
बच्चों को छात्रवृत्ति और प्रोत्साहन स्मृतिशेष है।
तेरी हर इक बात निराली हैं,
ए डाकिए तेरी यही कहानी है।

नगद भुगतान करते हो कोशिशें तमाम करते हो,
चाहे जैसे भी परिस्थिति हो मुश्किलें आसान करते हो।
गांव-शहर हर जगह तेरी कहानी है,
ए डाकिए तेरी यही कहानी है।

तुम महान हो, बेमिसाल हो, डाकघर की जान हो,
धूप, छाव, ठंड, गरम हर मौसम में करते खुद को बलिदान हो।
तुमने हर दिलो से दुआ कमानी है,
ए डाकिए तेरी यही कहानी है।

उर्मिला सैनी
डाक सहायक इंदौर नगर मुख्य डाकघर, इंदौर

प्रसंग : गोल्डन हार्ट

कहते हैं जिनकी ऑंखे बहुत जल्दी भर आती हैं, वे लोग कमजोर नहीं होते, बल्कि कोमल हृदय के होते हैं। कच्चे दिल के होते हैं, लेकिन उनका मन बहुत साफ होता है। ऐसे लोग हमेशा दूसरों की मदद के लिये आतुर रहते हैं। फिर चाहे दूसरों का हित करने की खातिर वे स्वयं परेशानी में क्यों न पड़ जाये। आजकल के जमाने ऐसे लोग विरले होते हैं। ऐसे लोगों को गोल्डन हार्ट वाला व्यक्ति कहा जाता है।

ऐसी ही एक महिला से मेरा मिलना हुआ 2022 में ,जब मैं बचत बैंक शाखा में काउंटर पर कार्यरत थी। शनिवार का दिन था लगभग पौने दो बजे, एक बुजुर्ग महिला काउंटर पर लगभग बीस केवीपी सर्टिफिकेट लेकर लाईन में लगी। पहले मैंने उनसे निवेदन किया कि समय समाप्त होने वाला है, आपके कार्य में समय लगेगा, क्या आप इस कार्य हेतु सोमवार आ सकती हैं? निराश होकर किंतु बडी ही शालीनता से उन्होंने कहा कि आज जितना हो जाऐ उतने सर्टिफिकेट डिस्चार्ज कर दीजिए, शेष भुगतान मैं सोमवार को ले लूँगी। इतनी विनम्रता से उन्होनें जवाब दिया कि मेरी जगह कोई और भी होता तो बीस तो क्या चालीस सर्टिफिकेट होते तो भी मना नहीं करता।

मैंने सिस्टम में चेक करके उन्हें बताया कि आपके केवायसी भी अपडेट नहीं हैं। आप आधार एवं पेन कार्ड की छायाप्रति एवं केवायसी फार्म भरकर दे दीजिए। जैसे ही मैंने उनका पेनकार्ड हाथ में लिया । मैंने कहा कि यह फोटो बहुत पुरानी लग रही है, लेकिन आप बहुत सुंदर लग रही हैं, बिल्कुल सायरा बानो की तरह।
मेरी बात सुनकर वो मुस्कुरा दी और बोली सचमुच। मैं अपने जमाने में ब्यूटी कांटेस्ट की विनर भी रह चुकी हूँ। मैं उनके बचत पत्रों में सेविंग खाते की किफ मर्ज कर रही थी, साथ ही उनकी बात भी सुनती जा रही थी। आंटी आगे कहने लगी कि मुझे सजने सॅंवरने एवं स्वयं को अप– टू–डेट रखने का बहुत शौक था। लेकिन अब मुझे याद नहीं कि आखिरी बार मैंने कब मेकअप किया था। पिछले एक दशक में मेरी जिदंगी ही बदल गयी। मेरे पति को कैंसर हो गया। उनके इलाज, दवा गोली, किमो थेरेपी आदि के लिये मैंने अस्पतालों के न जाने कितन चक्कर लगा दिये। ऐसा कहते कहते उनकी ऑंखें भर आयी। मैंने कहा कि प्लीज बैठ जाइए, आपका काम होने ही वाला है। लेकिन वे बोली कि मैं काउंटर पर ही सहज हूँ। मेरा मन भी भारी हो गया। मैंने उनसे पूछा कि अब आपके पति कैसे हैं? आंटी बोली कि अब वे इस दुनिया में नहीं है। पिछले महीने ही उनका देहांत हो गया। आंटी की ऑंखें फिर नम हो गयी। सवा दो बज चुके थे, उनकी बचत खाते की पासबुक में एंट्री मैंने कर दी थी। लेकिन लंच पर जाने का मन नहीं हो रहा था। मैंने उन्हें पानी की बोतल देते हुए कहा कि पानी पी लीजिए और मेरे साथ लंच कर लीजिए। वे बोली कि नहीं बेटा थैंक्यू। अब मुझे चलना होगा। मेरे एनजीओ के बच्चे और स्टाफ मेरा इंतजार कर रहे होंगे। ईश्वर की कृपा से एक छोटा सा एनजीओ चलाती हूँ। जितना हो सकता है, यथाशक्ति एवं समय निकालकर गरीब एवं अनाथ बच्चों की सहायता करती हूँ। कभी समय मिले तो आना। यह कहकर उन्होंने अपना कार्ड मुझे थमा दिया और बोली कि माफ करना, पता नहीं क्यूँ बात करते समय थोडा भावुक हो गयी, गॉड ब्लेस यू, बेटा ! यह कहकर ऑंटी बाहर की तरफ चली गयी।

वो चली गयी लेकिन मैं अपने स्थान पर खडी रह गयी। सोचती हूँ कि वो कितनी परेशानियों से जूॅंझ चुकी हैं। लेकिन फिर भी कितनी सहज हैं। मैंने थोडा प्यार से बात की तो उन्होनें अपना दर्द साझा कर लिया। इस दुनिया में न जाने कितने लोग हैं जो हजारों की भीड़ में भी एकदम अकेले हैं। अगर किसी से प्रेम के दो शब्द बोलने से उनके चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाए तो समझ लो कि आज का दिन सफल हो गया और आज एक गोल्डन हार्टेड महिला से मिलकर भी मेरा दिन भी सफल हो गया। किसी ने सच ही कहा है कि :

"किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार, किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार,
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार, जीना इसी का नाम है" ॥

सुरेन्द्र प्रताप सुमन
छटॉई सहायक, रेल डाक सेवा, एम.पी. मण्डल, भोपाल

कविता : माँ और मैं

मैं हर बार कोशिश करता हूँ कि
लिखूं माँ कि संवेदनाओ को बयाँ करू,
पर हर बार ज़ेहन में लगता है कि
कुछ अधूरा रह गया हो जैसे !

माँ ने देखा है मुझे पनपते हुए,
मेरा फलना, मेरा फूलना,
मेरा किसी ज़रा–सी बात पर मुरझा जाना !

दुनिया में केवल वह माँ ही तो है
जिसने मुझे एक बीज से लेकर
आजतक के सफ़र को एकटक देखा है !

हाँ होती है माँ पर भी दर्द की मूसलाधार बारिशें
पर उसकी कोख की पुख्ता दीवारे पी जाती है सारा दंश
और हम तक पहुँचती है बस वात्सल्य से भरी दवायें !

आज भी अवसाद से घिरा जब भी घर लौटता हूँ
तो माँ को देखते ही उग आती है उदासी कि
जमीं पर मुस्कुराहटो की कोपलें और लगता है जैसे
मेरी दुनिया की तमाम खुशियों का डेरा माँ के पल्लू में होता हो !

कभी अपना सिर रखकर सोना माँ की गोद में माँ आज भी तुम्हें अपलक
निहारेगी चूमेगी तुम्हारे हाथों को तुम्हारे माथे को बार–बार !

तुम्हें भ्रम है कि तुम बड़े हो गए हो पर उसकी ममत्व से भरी आँखे
आज भी तुम्हें ऐसे देखती है जैसे देखा था माँ ने तुम्हें पहली बार
चूमे थे तुम्हारे नन्हे–नन्हे हाथ जब तुम पैंदा हुए थे !

भल्लू सिंह मीना
डाक सहायक, सीहोर प्रधान डाकघर, सीहोर

कविता : पढ़ाव उम्र का

परित्यक्त, अनाथ, बेसहारा, रोगी
करता आश्रय की कामना,
वृद्धाश्रम में बैठा मौन, बस बादल निहारता
क्यों लेता मेरा इम्तेंहान बार–बार बस इसी का जवाब तलासता
कहता है, के क्या कसूर था, मेरा हे नाथ
जो आज तूने बैठा दिया है अनाथ !

क्या पाया, क्या खोया सब कुछ चला गया इस भ्रम के साथ
अपना–अपना कहकर समझता था जिसे मैं उम्र का साथ
ले चल मुझे इस संसार से हे नाथ अपने साथ !

मेरे बनाये स्वप्न, घर, परिवार
सब बदल गए हैं वक़्त के साथ
इस उम्र में ना है कोई मेंरे साथ
तो लगता है बस तू ही है अकेला है मेरे साथ !

हर सुबह, उठता हूँ सूर्य की रोशनी के साथ
फिर नित लेता में एक दृढ़ संकल्प जल के साथ
इस उम्र को गंवाया मैंने बिना लिए तेरा नाम
अगले जन्म में मुझे देना तेरी सेवा का अधिकार !

राजभाषा एक परिचय

डाक एक्सप्रेस के पिछले अंक में "राजभाषा एक परिचय" शीर्षक से राजभाषा हिन्दी के नियम, अधिनियम एवं प्रावधानों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गयी थी। इसी क्रम में कुछ और महत्वपूर्ण जानकारी आपके समक्ष प्रस्तुत है :

राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) :

ऐसे कार्यालय जहाँ के 80 प्रतिशत या उससे अधिक अधिकारी/कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है और जिन्हें अभी तक राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के तहत अधिसूचित नही किया गया है, को अधिसूचित करवाया जाना चाहिए। साथ ही समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से इस आशय का घोषणा पत्र भी प्राप्त कर लेना चाहिए कि उन्हें हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है अथवा हिन्दी आती है।

राजभाषा नियम 8(4) :

अधिसूचित कार्यालयों के ऐसे अधिकारी/कर्मचारी जो हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, को कार्यालय प्रमुख द्वारा इस आशय का व्यक्तिशः आदेश जारी किया जाना चाहिए कि वे अपने कार्यालयीन कार्य में जैसे– टिप्पणी, मसौदा लेखन, रजिस्टर में प्रविष्टियाँ व अन्य कार्यालयीन कार्य हिन्दी में ही करें।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 11– मैनुअल, संहिताएँ, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि :

1. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित मैनुअल, संहिताएँ, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में मुद्रित या प्रकाशित किए जाए।
2. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में प्रयोग होने वाले रजिस्टरों के प्रारूप और शीर्षक द्विभाषी में होंगे।
3. केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में प्रयोग होने वाले नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष (लेटर हैड) और लिफाफो आदि पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएगी, मुद्रित होंगी।

राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 जाँच बिन्दु बनाना :

इस नियम के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करें कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमों के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त एवं प्रभावकारी जाँच बिन्दु बनाए जाए ताकि राजभाषा नियमों का सुदृढ़ता से पालन किया जा सके।

कार्यालयों में आयोजित बैठकों में हिन्दी का प्रयोग :

कार्यालयों में आयोजित की जाने वाली विभिन्न बैठकों की कार्यसूची हिन्दी में तैयार की जाए तथा हिन्दी में ही परिचर्चा की जाए साथ ही बैठक के कार्यवृत्त हिन्दी में ही जारी किए जाएं।

विभागीय परीक्षाओं में हिन्दी का प्रयोग :

विभिन्न भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न–पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न–पत्रों के उत्तर हिन्दी में भी देने की छूट दी जाए और परीक्षाओं के प्रश्न–पत्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। इसी के साथ ही साक्षात्कार में उम्मीदवारों को हिन्दी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

प्रशिक्षण में हिन्दी का प्रयोग :

कार्यालय में दिये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण चाहे वह अल्पावधि के हो या दीर्घावधि के, में हिन्दी में प्रशिक्षण दिया जाएं तथा ग क्षेत्र में प्रशिक्षण सामग्री हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराई जाएं।

अक्षय ज्योतिषी

डाक सहायक (अमला अनुभाग), परिमंडल कार्यालय भोपाल

कविता : 'शायद नहीं'

शायद नहीं कि मेरे जज्बातों के आईने से ,
धुंधला वजूद ही दिख सके।
शायद नहीं कि मेरी हिलती जुबान हिचकते शब्दों को,
कोई नया लिबास मिल सके।
शायद कि एक रात अंधेरे में रोशन
फिजा सा कोई जुगनू चमक सके।
शायद नहीं कि किनारा कभी किसी नदिया का,
अन्य किनारे से जुड़ सके।
शायद कि उस रात की कोई रात ही न हो,
जो अंधयारे भरे सवेरे को जन्म दे सके।
शायद कि कोई मुकाम मेरे लिए अंतिम पायदान बन जाए।
या कोई धुन संगीत की अंदर से संतृप्त कर जाए।
शायद कि मै छानकर पी सकूं संतुष्टि का घूंट।
और शायद कि मैं एक रात ही सुकून से सो सकूं।
शायद रोशनी अंतिम शख्स तक पहुंच सके।
शायद कि अंतिम तबका समाज का भयमुक्त हो सके।
शायद हो कि मुझे हैरानिया न हों उपकार से,
शायद न ही कि मुझे अलगाव न हो संसार से।
शायद ही कि ऐसा चमन, ऐसा बसेरा फिर आएं।
शायद हो कि आंखे मेरी फिर भर न पाए।
शायद हो कि यह शायद दोबारा मेरे घर में घर ना कर पाए।

निर्भय सिंह
एमटीएस, परिक्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर

लेख : पत्नी

(इस आत्मीय संदेश में पत्नी की भावनाएं और उसकी देखभाल की जिम्मेदारी को दर्शाया गया है, जो उसके जाने के बाद भी परिवार को संभालने का संदेश देती है।)

पत्नी है तो दुनिया में सब कुछ है। राजा की तरह जीने और आज दुनिया में अपना सिर ऊंचा रखने के लिए अपनी पत्नी का शुक्रिया अदा कीजिए। आपकी सुविधा–असुविधा, आपके बिना कारण के क्रोध को संभालती है। तुम्हारे सुख से सुखी है और तुम्हारे दु:ख से दु:खी है। आप रविवार को देर तक बिस्तर पर रहते हैं लेकिन इसका कोई रविवार या त्योहार नहीं होता है। चाय लाओ, पानी लाओ, खाना लाओ। ये ऐसा है और वो ऐसा है। कब अक्ल आएगी तुम्हें? ऐसे ताने हम मारते हैं। उसके पास बुद्धि है और केवल उसी के कारण तो आप जीवित हैं। वरना दुनिया में आपको कोई भी नहीं पूछेगा। अब जरा इस स्थिति की सिर्फ कल्पना करें, एक दिन 'पत्नी' अचानक रात को गुजर जाती है! घर में रोने की आवाज आ रही है। पत्नी का 'अंतिम दर्शन' चल रहा था। उस वक्त पत्नी की आत्मा जाते–जाते जो कह रही है, उसका वर्णन।

"मैं अभी जा रही हूँ, अब फिर कभी नहीं मिलेंगे। जिस दिन शादी के फेरे लिए थे, उस वक्त साथ–साथ जीने का वचन दिया था, पर अब अकेले जाना पड़ रहा है, यह मुझको पता नहीं था। मुझे जाने दो। अपने आंगन में अपना शरीर छोड़ कर जा रही हूँ। बहुत दर्द हो रहा है मुझे, लेकिन मैं मजबूर हूँ, अब मैं जा रही हूँ। मेरा मन नहीं मान रहा, पर अब मैं कुछ नहीं कर सकती........... मुझे जाने दो।

बेटा और बहू रो रहे हैं, देखो। मैं ऐसा नहीं देख सकती और उनको दिलासा भी नहीं दे सकती हूँ। पोता 'बा बा बा' कर रहा है, उसे शांत करो, बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हो। हाँ और आप भी मन मजबूत रखना और बिल्कुल ढीले न होना.....मुझे जाने दो।

अभी बेटी ससुराल से आएगी और मेरा मृत शरीर देखकर बहुत रोएगी। उसे संभालना और शांत करना। और आप भी बिल्कुल नहीं रोना। मुझे जाने दो। जिसका जन्म हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। जो भी इस दुनिया में आया है, वह यहाँ से ऊपर गया है। धीरे–धीरे मुझे भूल जाना, मुझे बहुत याद नहीं करना। और इस जीवन में फिर से काम में डूब जाना। अब मेरे बिना जीवन जीने की आदत जल्दी से डाल लेना..............मुझे जाने दो।

पिछले पृष्ठ से जारी

आपने इस जीवन में मेरा कहा कभी नहीं माना है। अब जिद छोड़कर व्यवहार में विनम्र रहना। आपको अकेला छोड़कर जाते हुए मुझे बहुत चिंता हो रही है, लेकिन मैं मजबूर हूँ ....मुझे जाने दो। आपको डायबिटीज है, गलती से भी मीठा नहीं खाना, अन्यथा परेशानी होगी। सुबह उठते ही दवा लेना न भूलना। चाय अगर आपको देर से मिलती है तो बहू पर गुस्सा न करना। अब मैं नहीं हूँ, यह समझकर जीना सीख लेना.. ....मुझे जाने दो।

बेटा और बहू कुछ बोले तो चुपचाप सब सुन लेना। कभी गुस्सा नहीं करना। हमेशा मुस्कुराते रहना, कभी उदास नहीं होना। मुझे जाने दो। अपने बेटे के बेटे के साथ खेलना। अपने दोस्तों के साथ समय बिताना। अब थोड़ा धार्मिक जीवन जीएं ताकि जीवन को संयमित किया जा सके। अगर मेरी याद आये तो चुपचाप रो लेना लेकिन कभी कमजोर नहीं होना.........मुझे जाने दो।

मेरा रूमाल कहां है, मेरी चाबी कहां है, अब ऐसे चिल्लाना नहीं। सब कुछ ध्यान से रखने और याद रखने की आदत डालना। सुबह और शाम नियमित रूप से दवा ले लेना। अगर बहू भूल जाये तो सामने से याद कर लेना। जो भी खाने को मिले, प्यार से खा लेना और गुस्सा नहीं करना। मेरी अनुपस्थिति खलेगी, पर कमजोर नहीं होना....... ....मुझे जाने दो।

बुढ़ापे की छड़ी भूलना नहीं और धीरे–धीरे चलना। यदि बीमार हो गए और बिस्तर में लेट गए तो किसी को भी सेवा करना पसंद नहीं आएगा। मुझे जाने दो। शाम को बिस्तर पर जाने से पहले एक लोटा पानी मांग लेना। प्यास लगे तो ही पानी पी लेना। अगर आपको रात को उठना पड़े तो अंधेरे में कुछ लगे नहीं, इसका ध्यान रखना.........मुझे जाने दो।

शादी के बाद हम बहुत प्यार से साथ रहे। परिवार में फूल जैसे बच्चे दिए। अब उस फूलों की सुगंध मुझे नहीं मिलेगी। मुझे जाने दो। उठो, सुबह हो गई, अब ऐसा कोई नहीं कहेगा। अब अपने आप उठने की आदत डाल लेना, किसी की प्रतीक्षा नहीं करना..........मुझे जाने दो। और हाँ, एक बात तुमसे छिपाई है, मुझे माफ कर देना। आपको बिना बताए बाजू की पोस्ट ऑफिस में बचत खाता खुलवाकर 14 लाख रुपये जमा किये हैं। मेरी दादी ने सिखाया था कि एक–एक रुपया जमा करके कोने में रख देना। इसमें से पाँच–पाँच लाख बहू और बेटी को देना और अपने खाते में चार लाख रखना अपने लिए...........मुझे जाने दो। भगवान की भक्ति और पूजा करना भूलना नहीं। अब फिर कभी नहीं मिलेंगे ! ....मुझसे कोई भी गलती हुई हो तो मुझे माफ कर देना।"

नितिन जोशी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, भोपाल संभाग, भोपाल

कविता : अनवरत

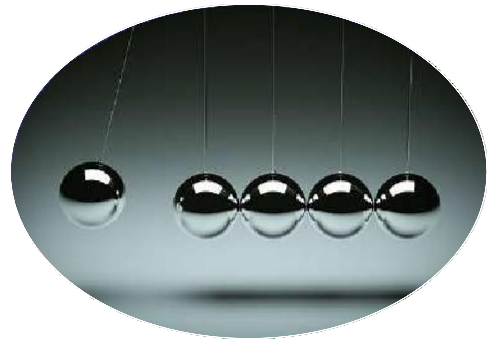

यूँ ही अनमना सा उम्र का सफर बीत रहा....
जीवन का मधुघट रह रह कर रीत रहा......
कभी अकस्मात और कभी रह रह कर
काल अपनी हर चाल में जीत रहा........

कभी चढ़ रही थी उम्र....सपनो का साथ था
अब रह रह कर सोचना पड़ रहा
कि कल तक इस सफर में कौन साथ था.....

लेकिन सोचता हूँ हर तूफान के बाद फिर खड़े
होना ही इस "यात्रा" का अकेला नियम है.......
मैंने देखा कि हर पतझड़ के बाद प्रकृति
न शोक मनाती न अतिरेक दिखाती
बस खामोशी से नए कार्य में जुट जाती है.......

निर्माण.. विध्वंस विध्वंस पुनर्निर्माण
यही चक्र "अनवरत" है......
विगत का स्वीकार और आगत का स्वागत
सिर्फ यही नियम शाश्वत है......

अनुराग ढेंगुला
एचएसजी - 1 डाकपाल सीहोर प्रधान डाकघर

यात्रा वृतांत : पचमढ़ी

प्रारंभ करते हैं 15 मार्च 2006 की देर रात्रि दो बजकर 10 मिनट से। जब हबीबगंज–निजामुद्दीन (शान–ए–भोपाल) एक्सप्रेस के ए.सी. थर्ड कम्पार्टमेन्ट से हम झांसी रेलवे स्टेशन पर उतरे। हम में शामिल थे, मैं, गुड़िया तथा अमृषा। अभी दतिया के लिए दूसरी ट्रेन महाकौशल एक्सप्रेस के आने में 2 घण्टे का समय था। मानसिक स्थिति ऐसी बन चुकी थी कि एक–एक पल इंतजार करना कठिन हो रहा था। अतः स्टेशन से बाहर निकलकर मैंने एक टैक्सी वाले से बात की और दतिया तक परिवार सहित आ गया। इससे पहले हम 12 मार्च की शाम से 14 मार्च की शाम तक "सतपुड़ा की रानी" के नाम से प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पचमढ़ी में थे।

यात्रा की शुरूआत 11 मार्च को झांसी से ही की थी। यहाँ से शताब्दी एक्सप्रेस द्वारा भोपाल पहुँचे। भोपाल रेलवे स्टेशन से सीधे अपने मित्र पवित्र श्रीवास्तव के अरेरा कॉलोनी स्थित घर गए। वह यहाँ माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय में जन संपर्क एवं जन संचार विषय के विभागाध्यक्ष हैं। शताब्दी भोपाल लगभग 2 बजे दोपहर में पहुँचती है। सायं 4.00 बजे तक हम पवित्र के परिवार के साथ भोपाल शहर में घूमने निकल पड़े। भोपाल को तालाबों का शहर भी कहा जाता है। सबसे पहले हम बड़े तालाब पहुँचे। संयोग से उस समय इस तालाब में संगीतमय क्रूज चलना प्रारंभ ही हुआ था। मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा इस स्थल को विकसित किया गया है, किनारे पर बतखे तैर रही थी, जिन्हें बच्चे दाना चुगाकर आनंदित हो रहे थे। यहाँ बोटिंग करना काफी रोमांचक होता है, लेकिन हमारी दिलचस्पी क्रूज की सवारी में ज्यादा थी, क्योंकि कुछ वर्ष पूर्व हमने गोवा में इसका आनंद लिया था और हम उन स्मृतियों को तरो–ताजा करना चाहते थे। लगभग एक घंटे की सवारी का टिकिट 125 रूपये था। पूरे एक घंटे तक डेक पर संगीत की धुनों के साथ शहर की जगमगांते लाइटों को देखना, कभी पानी में झांकना तो कभी आसमान में जगमगाते सितारों को साथ–साथ चलते महसूस करना, आप अंदाजा लगा सकते हैं, हमारे आनंद का। किनारे आकर एक–एक आईसक्रीम खाई और न्यूमार्केट आ गए। भोपाल शहर के मध्य में स्थित यह एक प्रसिद्ध बाजार है, जहाँ विभिन्न प्रकार के कपड़े एवं तकनीकी उपकरण सामान प्रमुखता से उपलब्ध हैं। यहीं एक रेस्टोरेन्ट में हमने भोजन किया और भोपाल की सड़कों को निहारते हुए पवित्र के घर आ गये। आपस में बातचीत करते हुए हमने पवित्र को परिवार सहित पचमढ़ी चलने का आग्रह किया, मगर उसने व्यस्तता के कारण हमारे साथ जाने में असमर्थता जताई।

यात्रा वृतांत : पचमढ़ी

अगले दिन सुबह हम भोपाल से टैक्सी द्वारा पचमढ़ी के लिए रवाना हुए। बीच में होशंगाबाद में नर्मदा नदी के किनारे कुछ देर रूकते हुए हम पिपरिया होते हुए पचमढ़ी पहुँचे। अंधेरा घिर आया था, पचमढ़ी के कई होटलों का भ्रमण करने के बाद होटल पांडव में हमने 800/– रूपये प्रति दिन के हिसाब से एक स्यूट किराए पर लिया। 12 मार्च की रात्रि के 9 बज चुके थे, हमने होटल के कमरे में ही खाना खाया और थकान के कारण शीघ्र ही सो गए।

दिनांक 13 मार्च 2006 को सोमवार था, सुबह 11 बजे से हमने घूमने की शुरूआत महादेव जी के दर्शन से की। हम जटा शंकर मंदिर पहुँचे जो शहर के करीब ही है। यहाँ तक पहुँचने के लिए नीचे सीढ़ियाँ उतरनी होती है, जहाँ एक दम संकरे स्थान पर शिवलिंग स्थित है। ऐसी मान्यता है कि जब शिवजी ने भस्मासुर को, जिस पर भी हाथ रख दे, वह भस्म हो जाये ऐसा वरदान दे दिया तो भस्मासुर ने शिवजी को ही भस्म करने की कोशिश की। तब महादेव ने इसी गुफा में अपना स्थान बनाया था। जटाशंकर पर शिवलिंग के साथ कुछ जटानुमा चट्टानें भी हैं, जिन के बारे में किवदंती है कि यह भगवान शंकर की जटाये हैं। यहाँ एक स्थान से गर्म पानी भी निकलता है, जिसकी भाप ऊपर उड़ती हुई दिखाई देती है। पचमढ़ी महादेव की नगरी है, गुफा, समतल, चोटी सभी स्थानों पर आपकी उपस्थिति है। यहां से चलने के पश्चात हम बाल उद्यान जिसमें बच्चों के लिए मनोरंजन के ढेर सारे उपकरण मौजूद हैं, में थोड़ी देर रूके। इसके सामने चीतल एवं हिरणों का एक झुण्ड बाड़े में मौजूद था। बच्चे इन्हें देखकर बहुत खुश हुए। अब हमारी अगली मंजिल बी–फॉल जल प्रपात थी।

हम बी–फॉल (प्रपात) के ऊपर अपनी इंडिका गाड़ी से पहुँचे तो ज्ञात हुआ कि इस मुहाने से बी–फॉल की दूरी लगभग 2 किलोमीटर है और वहाँ तक जाने के लिए पेट्रोल चलित 4 व्हील ड्राइव गाड़ी होना अनिवार्य है। वहाँ स्थानीय व्यक्तियों द्वारा संचालित मारूति–जिप्सी खड़ी हुई थी, मगर थोड़ी दूरी के लिए भी इनका किराया बहुत अधिक होता है। हमने भी इन जिप्सी चालकों से बात की मगर इनके द्वारा बताया गया किराया हमें ठीक लगा नहीं और हम पैदल ही चल पड़े। रास्ते में अन्य पर्यटक भी हमको पैदल आते–जाते मिले, मुख्य प्रपात स्थल तक जाने के लिए बहुत सीढ़ियाँ उतरनी होती है। इस प्रपात में लगभग 150 फीट की ऊंचाई से पानी गिरता हैं और चट्टानों से टकराकर पानी की बूंदे मधुमक्खी (बी) जैसी उड़ती है। प्रपात का पानी आगे बहकर एक कुण्ड का रूप लेता है, जिसमें कुछ व्यक्ति स्नान कर रहे थे। यहाँ हमें पर्यटन पर आधारित एक राष्ट्रीयः पत्रिका का फोटोग्राफर मिला, जिसने प्रपात के पास की चट्टान पर हमें सपरिवार बिठा कर फोटोग्राफी की। जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि इसी प्रपात द्वारा बनाये गये सरोवर से पचमढ़ी शहर को पीने का पानी सप्लाई होता है। ध्यान रखें इस प्रपात तक पहुँचने के लिए काफी सीढ़ियाँ उतरना एवं ऊपर आने के लिए चढ़ना होती है। अतः थकान हो सकती है। आप चाहे तो खाने पीने का सामान साथ रखें, जिससे आप रूककर अपने आपको तरो ताजा रख सकें। सीढ़ियाँ उतरते–चढ़ते हम भी थक चुके थे।

यात्रा वृतांत : पचमढ़ी

इस श्रम भरे पर्यटन के बाद हम एक अच्छी भूख का अनुभव कर रहे थे। पचमढ़ी में जगह–जगह खुले रेस्टोरेन्ट एवं ढाबों में ताजा गरमा–गरम भोजन करने का अपना एक अलग ही मजा है। हमने भी समीप के ढाबे की शरण ली, मन चाहा भोजन एवं विश्राम करने के बाद हम तैयार थे पुनः घूमने के लिए। शाम होने को थी और धूपगढ़ की चोटी से सूर्यास्त देखने के लिए हम लालायित थे। सूर्योदय एवं सूर्यास्त को विभिन्न कोणों से देखने के शौकीनों के लिए पचमढ़ी कई नयनाभिराम दृश्य उपलब्ध कराता है। यद्यपि जिस जगह पर हम लोग रहते हैं, काम करते हैं, सूर्योदय और सूर्यास्त वहाँ भी होता है, मगर जिन्दगी की आपा–धापी में हमें यह ध्यान भी नहीं रहता कि प्रकृति की इन दैनिक क्रियाओं में भी इतना सौन्दर्य हो सकता है।

इस चोटी पर बने उद्यान में बहुत पर्यटक एकत्रित थे। हम सब सूरज के लाल गोले को लालिमा बिखेरते हुए शांत भाव से पहाड़ी के पीछे जाते देख रहे थे, जैसे कोई योगी महाराज निष्काम भाव से अपना कर्म पूरा कर समाधिस्थ हो रहे हों। जहाँ से हम यह दृश्य देख रहे थे, वहीं एक वृक्ष भी था जिसे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने स्वयं लगाया था, उन्हें यह जगह और यहाँ से सूर्यास्त को देखना बहुत अच्छा लगता था। सूर्यास्त हो चुका था, हवा में ठंडक बढ़ रही थी, हम सब एक राय होकर होटल पहुँचे। गर्म पानी से हाथ मुंह धोकर थकान उतारी। गुड़िया ने चाय का आर्डर दिया, मैंने टेलीविजन पर चैनलों की परिक्रमा करना आरंभ की।

मन में आज रात्रि के भोजन को लेकर खासा उत्साह था, क्योंकि अलाव के चारों ओर बैठकर भोजन परोसा जाने वाला था, ऐसा हमें होटल के मैनेजर ने सुबह ही बता दिया था। ठीक 8:00 बजे जब हम होटल के लॉन में पहुँचे तो वहाँ टेबल रखी हुई थी, इन सभी टेबलों के नीचे धातु के पात्र में अलाव जल रहे थे। हमने वहाँ बैठकर भोजन का लुत्फ उठाया और ऐसा महसूस किया कि मानों जंगल में कैंप–फायर के इर्द–गिर्द भोजन कर रहे हों। यहाँ गरमा–गरम तंदूरी रोटियों के साथ मक्खन का मजा भी हमने लिया।

क्या आपने कभी सोचा है कि पचमढ़ी को सतपुड़ा की रानी क्यों कहते है? जब आप यहाँ आयेंगे तो इसका जवाब आपको स्वतः ही मिल जायेगा। प्रकृति ने अपने आभूषणो से इसका श्रृंगार बिल्कुल रानियों की तरह किया है निख से शिखर तक, ऊँची पहाड़ियों से लेकर गहरी खाईयों तक, प्रकृति ने इसे मन से सजाया संवारा है। मोती की लड़ियों की तरह जब पानी हरी–भरी पहाड़ियों के बीच से गिरता है, तो लगता है जैसे पहाड़ी की मांग मोती से भरी जा रही हो। आस–पास लगी विभिन्न रंग की वनस्पतियाँ इसके रूप रंग में चार–चाँद लगा देती है। पचमढ़ी के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर मन तरोताजा हो जाता है। आम के वृक्षों की तो यहाँ भरमार है, सुनने को मिला कि कुल उत्पादन के सिर्फ दस प्रतिशत आम ही खाने में उपयोग होते हैं, बाकी तोड़े ही नहीं जा सकते, क्योंकि उन वृक्षों तक आदमी का पहुँचना ही मुश्किल होता है।

यात्रा वृतांत : पचमढ़ी

अगले दिन हमारा पहला पड़ाव था, पाण्डव गुफायें। यह पर्यटन स्थल अपने आपमें सम्पूर्ण है। एक पहाड़ी पर छोटी–छोटी गुफायें बनी हुई हैं। समीप ही एक सुन्दर उद्यान है। ऐसी मान्यता है कि महाभारत काल में पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय इन गुफाओं में बिताया था। कुछ ऐतिहासिक चिन्हों के द्वारा गाइड इस तथ्य की पुष्टि भी करता है। मगर एक अन्य व्यक्ति ने पाण्डवों के अज्ञातवास से संबंधित तथ्य को झुठलाते हुए बताया कि वास्तव में यह बौद्ध गुफाये हैं। गुफायें पहाड़ी के ऊपर बनी हुई है, वहाँ तक जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई है। जब हम ऊपर चढ़ रहे थे तो पहाड़ी की दरार में से झांकता हुआ एक पतला सांप दिखाई दिया। अलग प्रकार के दिखने वाले इस सांप का हमने फोटो भी खींचा, मगर आहट सुनकर सांप अंदर सरक गया। बाद में जब फोटो देखा तो उसमें सांप की आकृति अस्पष्ट आयी। इस पहाड़ी के नीचे तल पर एक सुंदर उद्यान है, जिसमें कतारबद्ध लगे पौधे रंगबिरंगे फूलों के साथ आकर्षक लगते हैं। फोटोग्राफी के लिए यह एक आदर्श स्थल है। स्थानीय व्यक्ति घोड़ों के साथ खड़े हुए थे, पूछने पर पता चला कि वह शुल्क लेकर घुड़सवारी करवाते हैं और फोटो भी खींचने देते हैं। मैंने भी बच्ची को घोड़े पर घूमने दिया और जी भरकर फोटो खींचे।

यहाँ से भ्रमण समाप्त कर हम पचमढ़ी झील पहुँचे। यह झील ज्यादा बड़ी नहीं है, मगर इसमें वोटिंग का आनंद लिया जा सकता है। इस झील में गहरे स्थानों को चिन्हों द्वारा इंगित किया गया है, जिससे पर्यटक सावधान रह सकें। झील के किनारे छोटी–छोटी गुमठियाँ लगी हुई थी, जिनमें से एक पर प्याज तथा धनिया की चटनी के साथ पकौड़े खाये। इनका स्वाद बहुत अच्छा लगा। सूर्यास्त का समय हो रहा था। आसपास की छोटी–छोटी पहाड़ियो में सूर्य लुका–छिपी कर रहा था, नारंगी रंग की छटा से झील जगमगा रही थी, बहुत ही सुंदर दृश्य उत्पन्न हो रहा था। यहाँ कई नवविवाहित जोड़े ऊंट की सवारी का आनंद भी उठा रहे थे।

पचमढ़ी को प्रकाश में लाने का श्रेय ब्रिटिश सेना के केप्टन जेम्स फोरसिथ को जाता है, जिन्होंने 1857 के अपने फौजी अभियान के दौरान इसे खोज निकाला था। शुरूआत में ब्रिटिश सेना के उच्चाधिकारियों के स्वास्थ्य लाभ के लिए यह एक मनोरम स्थान था। धीरे–धीरे परिवार यहाँ निवास करने लगे। 1901 की जनगणना में यहाँ कई ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण किया गया। वर्तमान में भी पचमढ़ी कस्बे का अधिकांश क्षेत्र भारतीय सेना के पास है और इसे पचमढ़ी केन्टोन्मेन्ट क्षेत्र कहते हैं। विशेष परिस्थितियों में उपयोग के लिए धूपगढ़ के समीप एक हवाई पट्टी भी है, जिसका प्रयोग कभी–कभार ही होता है। कुछ वर्ष पहले तक इस हवाई पट्टी के समीप शेर एवं अन्य जंगली जानवरों को विचरण करते आसानी से देखा जा सकता था। चीते तो कई बार केन्टोमेन्ट क्षेत्र में घुस आते थे, लेकिन मनुष्य द्वारा जंगली जानवरों के अंधाधुंध शिकार के चलते ऐसे वाकये अब दुर्लभ हो गये हैं। पचमढ़ी एवं आस पास के क्षेत्र में किसी भी निर्माण कार्य के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार की अनुमति आवश्यक है।

यात्रा वृतांत : पचमढ़ी

घूमने के बाद हम अपने रात्रि भोज को लेकर खासे उत्साहित थे, क्योंकि बीते दिन का भोजन हमने जिस अंदाज में किया था, उसकी मधुर यादें हमारे जेहन में तरोताजा थी। खाने में परिवर्तन की दृष्टि से निकल पड़े किसी अज्ञात स्थान की ओर जहाँ हमें मन चाहा भोजन मिल सकें। शहर से थोड़ा आगे निकलते ही जमगये एक ढाबे में। यह सुन कर अच्छा लगा कि यहाँ आदेश देने के बाद ही ताजा भोजन तैयार होता है। उपलब्ध भोजन के आधार पर अपनी पसंद के भोजन का निर्देश दिया। यहाँ भी जगह–जगह अलाव जल रहे थे, भोजन भी स्वादिष्ट था, हम तन्मयता से भोजन का आनंद ले रहे थे।

14 मार्च की सुबह अप्सरा विहार जाने के लिए निकले। जंगल का मजा देने वाला यह सरोवर एक आदर्श पिकनिक स्थल माना जाता है, पैदल चलते हुए पेड़ों के बीच से गुजरना अच्छा अहसास देता है। यहाँ छोटे–छोटे पानी के गड्ढे नुमा कुण्ड बने हुए हैं, जिनके बारे में मान्यता है कि बीच वाले कुण्ड में द्रोपदी बैठकर स्नान करती थी और इर्द–गिर्द बने कुण्डों में पांचों पाण्डव बैठ जाते थे। जिससे द्रोपदी को कोई देख न सके। यह कुण्ड वास्तव में इतने स्थान को ही घेरते हैं, जिसमें एक व्यक्ति बैठ कर आराम से स्नान कर सकता है। यहाँ भी पैदल बहुत चलना होता है। अप्सरा विहार आते समय हमें रास्ते में रजत प्रपात दिखा। यह थोड़ा दुर्गम स्थल पर है। हमें बताया गया कि रजत प्रपात तक पहुँचने और पूर्ण आनंद लेने के लिए सुबह 10 बजे से सायं 5 बजे तक अर्थात पूरे 7 घण्टे का समय होना चाहिए। हमने इसे दूर से ही निहार कर संतोष किया। आगे घूमते हुए हांडी–खो पहुंचे। हांडी–खो एक संकरी एवं गहरी खाई है, जिसमें सांपों एवं अन्य जीव–जन्तुओं की भरमार है। इस खाई के इर्द–गिर्द आम एवं जामुन के वृक्ष लगे हुए हैं। इसे ऊपर से देखने के लिए स्थान बना हुआ है जिससे सावधानी से देखना ही उचित रहेगा। इस खाई का नामकरण एक हांडी नामक अंग्रेज के ऊपर किया गया है। इसी संदर्भ मे स्थानीय व्यक्तियों से यह भी सुनने में आया है कि एक बार वह इस हांडी खाई में गए तो वापस ही नहीं आये।

यहां से आगे बढ़ते हुए हम गुप्त महादेव पहुंचे। झुककर चलते हुए हम इस स्थल के शिवलिंग तक पहुंचे। संयोग से उस समय यहाँ एकांत था। मैंने शिवजी की स्तुति एक पाठ द्वारा की। कुछ समय बिताने के पश्चात वहाँ से रवाना हुए।

पचमढ़ी में पाई जाने वाली वनस्पतियों के महत्व को देखते हुए "पचमढ़ी क्षेत्र को मई 2009 में यूनेस्को ने अपनी "बायो स्पीयर रिजर्व" की सूची में शामिल किया है। पचमढ़ी में घूमने को अभी बहुत कुछ बाकी था मगर समय हमें इसकी इजाजत नहीं दे रहा था।

मेरा व्यक्तिगत विचार है कि कम से कम एक सप्ताह का समय पचमढ़ी में जरूर बिताना चाहिए। जिससे आप प्राकृतिक सौंदर्य के सानिध्य में पर्याप्त समय व्यतीत कर सकें। हृदय में पुनः आने की इच्छा लिए हम पचमढ़ी से भोपाल आ गये तथा झांसी होते हुए 15 मार्च 2006 को होली के दिन सुबह 5.00 बजे दतिया में थे।

मोनू गौड़

डाक सहायक, परिक्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

कविता : भला कौन पूछता है ....

क्यों धरती पर खड़े–खड़े नीला आसमान देखता है,
चल उठ और तू भर अपनी उड़ान,
क्योंकि जमाना तो बस तेरी उड़ान (जीत) देखता है ।
जीत जाओ तो यहाँ हर कोई पूछता है,
हारने वालों का हाल,
भला कौन पूछता है, भला कौन पूछता है ....
सिकंदर की जीत तो हर कोई देखता है
पर असल में जो जंग लडे, मर–मिटें,
और खून बहाया जिन्होंने, उनके अपनों का हाल,
फिर भला कौन पूछता है, भला कौन पूछता है ....
छपती है खबर जब किसी किसान के बेटे के
बड़ा अफसर बनने की,
तो दूर–दूर का रिश्तेदार भी फिर उसका हाल पूछता है
उसके साथ आकर फोटो भी खलूचता है
कैसे की हासिल उसने ये सफलता,
ये सवाल उससे फिर हर कोई पूछता है ....
अगर ना होता उसको ये मुकाम हासिल,
तो किस हाल में रहता है देश में किसान का परिवार,
कितनी मुश्किलें है उसके जीवन में,
उसके बारे में देश में सवाल,
भला कौन पूछता है, भला कौन पूछता है ......
व्हाटस–अप और इन्स्टाग्राम के इस आधुनिक दौर में,
कबूतर से लेकर चिठ्ठी वाली खबरों के बारें में
अब भला कौन सोचता है ....
साथ भी मतलब से देते है अब लोग इस ज़माने में,
काम निकल जाने के बाद,
पुराने दोस्तों का हाल भला कौन पूछता है, भला कौन पूछता है ......
सफ़र–ए–जिन्दगी में मुश्किलें हर कदम पर आयेंगी,
पर बस हिम्मत से आगे बढ़ाते रखना अपने क़दमों को,
क्योंकि आज के इस आधुनिक दौर में,
पीछे रह जाने वालों का हाल,
भला कौन पूछता है, भला कौन पूछता है ......

चन्द्रेश कुमार जैन
सहायक पोस्टमास्टर जनरल (लीगल /बिल्डिंग/ राजभाषा),
परिमंडल कार्यालय, भोपाल

भारतीय डाक - कुछ रोचक तथ्य

डाक प्रणाली अति प्राचीन व्यवस्था है जो विश्व के हर कोने में किसी न किसी रूप में रही है, भारत में बहुत प्राचीन काल में भी डाक के आदान प्रदान के संकेत मिलते हैं, प्राचीन डाक व्यवस्था भारत में डाक सेवाओं की एक पुरानी और विकसित प्रणाली थी, जो कई सदियों पूर्व से अस्तित्व में थी। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं :–

प्राचीन डाक व्यवस्था की विशेषताएं :

1. राजदूत और दूतों के माध्यम से संदेश भेजना
2. घुड़सवार और पैदल दूतों का उपयोग
3. राजमार्गों और मार्गों का निर्माण
4. डाकघरों और ठहरने के स्थानों की व्यवस्था

प्राचीन डाक व्यवस्था के मुख्य उद्देश्य :

1. राजाओं और शासकों के बीच संदेश भेजना
2. व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देना
3. सैन्य संदेशों को पहुंचाना
4. लोगों को सूचनाएं पहुंचाना

प्राचीन डाक व्यवस्था के प्रमुख केंद्र :

1. मौर्य साम्राज्य (322–185 ईसा पूर्व)
2. गुप्त साम्राज्य (320–550 ईसवी)
3. मुगल साम्राज्य (1526–1857 ईसवी)

प्राचीन डाक व्यवस्था के महत्वपूर्ण दस्तावेज :

1. अशोक के शिलालेख
2. मौर्य साम्राज्य के अभिलेख
3. गुप्त साम्राज्य के अभिलेख

- प्राचीन डाक व्यवस्था ने आधुनिक डाक व्यवस्था की नींव रखी और भारत में डाक सेवाओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- भारत में ब्रिटिश शासन काल में 1766 में लार्ड क्लाइव द्वारा डाक प्रणाली ब्रिटेन आदि की तर्ज पर प्रारम्भ की गयी थी बाद में इसमें वारेन हेस्टिंग्स द्वारा 1774 में व्यापक सुधार कार्य करवाए गये। पहला डाकघर 1786 में मद्रास में स्थापित किया गया था।
- भारतीय डाक (इंडिया पोस्ट) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण सेवा है, जो देश भर में डाक सेवाएं प्रदान करती है। इसकी स्थापना 1854 में हुई थी और यह भारत में सबसे पुरानी और व्यापक सेवाओं में से एक है। भारतीय डाक में समय समय पर कई सेवाओं का विस्तार हुआ जिसमें पहली पार्सल सेवा 1877 में प्रारम्भ में की गयी, पोस्टकार्ड सेवा 1879 में प्रारम्भ में की गयी।
- 1911 इलाहाबाद से पहली एअरमेल सेवा प्रारम्भ की गयी।

वर्तमान में भारतीय डाक की मुख्य सेवाएं हैं :

1. पत्र और पैकेट की डिलीवरी
2. मनी ऑर्डर सेवा
3. बैंकिंग सेवाएं
4. बीमा सेवाएं
5. कूरियर सेवाएं
6. पासपोर्ट सेवाएं
7. डाकघर बचत योजनाएं

भारतीय डाक के मुख्य उद्देश्य हैं :

1. देश भर में संचार को सुगम बनाना
2. लोगों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करना
3. सरकारी योजनाओं को लागू करने में मदद करना
4. देश के विकास में योगदान देना

भारतीय डाक की विशेषताएं हैं :

1. व्यापक नेटवर्क
2. कम लागत वाली सेवाएं
3. विश्वसनीय और सुरक्षित सेवाएं
4. नवीन तकनीक का उपयोग

भारतीय डाक ने हाल के वर्षों में कई नवाचार किए हैं, जैसे कि :

1. ऑनलाइन पेमेंट सेवाएं
2. मोबाइल ऐप
3. डिजिटल पोस्टल सेवाएं
4. ई–कॉमर्स सेवाएं

पिनकोड – भारतीय डाक विभाग द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक 6–आंकड़ों का कोड है, जो देश के विभिन्न क्षेत्रों को पहचानने के लिए उपयोग किया जाता है।

पिनकोड की विशेषताएं :

1. 6–आंकड़ों का कोड
2. पहले तीन आंकड़े जिले को पहचानते हैं
3. अगले तीन आंकड़े डाकघर को पहचानते हैं
4. प्रत्येक पिनकोड एक विशिष्ट डाकघर से जुड़ा होता है।

पिनकोड के लाभ :

1. डाक सेवाओं को तेजी से और सटीकता से पहुंचाना
2. पतों को आसानी से पहचानना
3. व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देना
4. सरकारी सेवाओं को सुगम बनाना

पिनकोड की जानकारी आप भारतीय डाक विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर प्राप्त कर सकते हैं।

शिल्पा अग्रवाल
डाक सहायक (लीगल अनुभाग), परिमंडल कार्यालय, भोपाल

लेख : समय की कवायद

चलिये.. आज टाइम मशीन में बैठकर अपने ही परदादा–परदादी से मिलने चलते हैं और उनसे उन सुविधाओं और उपकरणों की बातें करते हैं जो आज हमने अपने आस–पास और अपने लिए जुटा लिए हैं जैसे बढ़िया घर, तेज रफ्तार गाडियाँ, बेहतरीन चिकित्सा सुविधायें, आकर्षक आमदनी, चौबीस घंटे पानी, बगैर धुए का चूल्हा, फल–दूध–सब्जियों से भरा रेफ्रीजरेटर, कोसों दूर आडियो–वीडियो कॉल, हर दर्द–मर्ज की दवा....(गिनती जारी है)। तो वे अचरज से कहेंगे "अरे तुम तो स्वर्ग में हो... अब तो खेती करने, चक्की पीसने, मीलों पानी भरने, कोसों चलने से दूर... अब तुम सुकून की सुबह जीते होगे, रातों को चाँद–तारें निहारते होंगे, परिवार के साथ खेलते–खाते होगे"

लेकिन क्या ऐसा ही है? आज हम स्वर्ग में न सही लेकिन स्वर्ग जैसी परिस्थितियों में हैं, तो फिर उस आनद की अनुभूति कहाँ है? क्यों आज हमारे पास आनंद के जितने अवसर हैं, पर हम आनंद से उतने ही दूर हैं। यह सच है कि संचार, सुरक्षा, चिकित्सा, भोजन, यातायात, मनोरंजन, सूचना आदि सभी क्षेत्रों में हम अपनी पिछली पीढ़ियों से अत्यधिक सम्पन्न हैं। पर क्या धूप के टुकड़े अब भी घर में आते हैं?? क्या हम अब भी छतों पे रातें गुजराते हैं???

इस बेहतर की प्रक्रिया में कुछ मौलिक, कुछ खास, कुछ सरल, कुछ प्रकृति प्रदत्त आनंद पीछे छूट रहा है, या यूं कहें कि जीवन के बहुत से आयाम समृद्ध हुये हैं पर जो खो रहा है वह बहुत अनमोल है, और वह है इस धारा की सौगात पाने का 'आनंद'...

अब साधन जुट गए हैं, मशीनें हर तरह का काम कर रही हैं, रेडी टू ईट मील प्रोडक्ट्स, हर विषय पर सैकड़ों सेमिनार उपलब्ध है, यानि रफ्तार की कोई कमी नहीं है, और ये सब किया गया है समय बचा कर ढंग से जी पाने के लिए..... लेकिन समय बचा कहाँ?? आज समय की कमी की शिकायतें तो हर उम्र के लोगो के पास हैं।

इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि पुराने वक्त के लोगों में, अनुभवों में, किस्से–कहानियों में, आँगन में, चिट्ठियों–चौपालों में समय को बचाने का नहीं बल्कि समय के सदुपयोग का जिक्र होता है जबकि हम आज समय प्रबंधन में जुटे है, हमारा मानना है कि चौबीस घंटे वाले एक दिन में बहत्तर घंटे के काम वाले नतीजे हासिल किए जा सकते हैं, बेशक, किए जा सकते हैं। अगर यह दौड़ नतीजे हासिल करने की है तो नतीजे ही हासिल होंगे, पर आनंद और यादों की पोटलियाँ खाली ही रह जाएंगी।

तो फिर चलिए मुसकुराते हुये दौड़ते हैं, मकसद हासिल करते हैं और जरा थमकर छोटी–छोटी खुशियों के आनंद से, जीवन की ये पोटलियाँ भी भरते चलते हैं।

देशपाल अहिरवार
छटॉई सहायक, रेल डाक सेवा, एम.पी. मंडल भोपाल

कविता : भारतीय डाक विभाग

जीवन का यह अभिमान बना है
सुकन्या योजना गुणगान बना है

पीएमजेजेबीवाई, पीएमएसबीवाई बीमा चैन है
अटल पेंशन योजना आन बना है

गांवों में आरपीएलआई ने संवारा है जीवन
ये पीएलआई सबका स्वाभिमान बना है

पार्सल रजिस्ट्री स्पीड पोस्ट द्वारा
जन जन में सुविधा प्रमाण बना है

आईपीपीबी, एसए, आईपीओ, एमओ ने मिलकर
हर वक्त समस्या समाधान बना है

आरडी, टीडी, पीपीएफ, एससीएसएस, एनएससी, केवीपी
ऐसा लाभान्वित अभियान बना है

पासपोर्ट आधार की दुविधा छोड़ो
ये सबके लिए ऐसा संज्ञान बना है

पूजा की तरह है हमारा काम यहां
मंदिर सा डाक दफ़्तर मान बना है

डाकिए ये डाक नहीं बांटते केवल
प्रेम बांटने का अमर विधान बना है

Achievement

“ Making Waves : Vihaan Pesswani (s/o Smt Roma) Strikes Gold in Swimming Competition !”

We are delighted to share that our son **Master Vihaan Pesswani** (06 Years) has made a splash by winning **02 Gold Medals & 01 Silver Medal** in the Mini Group (Boys VI) District Level Swimming Tournament organized by Bhopal Swimming Association (Affiliated to M.P. Swimming Association) on14.07.2024.

सम्मान

रेल डाक सेवा एमपी मण्डल की मॉर्केटिंग टीम के द्वारा बड़े कॉर्पोरेट ग्राहक दैनिक भास्कर ग्रुप को बीएनपीएल ग्राहक के तौर पर दिनांक 03 जून 2024 को पंजीकृत किया गया है। इस उपलब्धि पर दिनांक 21 जून 2024 को माननीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमण्डल भोपाल एवं माननीय निदेशक (मुख्यालय) द्वारा श्रीमती स्वाती जैन, मॉर्केटिंग एक्सिक्यूटिव एवं श्री स्वप्निल सिन्हा, प्रशिक्षक, संभागीय प्रशिक्षण केन्द्र, रेल डाक सेवा, एमपी मण्डल भोपाल को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अधीक्षक रेल डाक सेवा, एमपी मण्डल भोपाल भी उपस्थित रहे।

झलकियाँ

10 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश डाक परिमंडल एवं निदेशक डाक सेवाएं (मुख्यालय) के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश परिमंडल कार्यालय के सभागार में समस्त समूह अधिकारी, सहायक अधीक्षक/निरीक्षक एवं अनुभाग पर्यवेक्षक के द्वारा योग किया गया एवं सभी के द्वारा निरोगी एवं ऊर्जावान जीवन यापन करने हेतु योग को अपनी दिनचर्या में आत्मसात करने का प्रण लिया।

झलकियाँ

दिनांक 6 जुलाई 2024 को राज्य आनंद संस्थान, भोपाल द्वारा एक दिवसीय अल्पविराम कार्यक्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, म परिमंडल द्वारा किया गया। इस अवसर पर श्री बृजेश कुमार, पोस्टमास्टर जनरल, जबल परिक्षेत्र, जबलपुर एवं श्री पवन कुमार डालमिया, निदेशक डाक सेवाएं मुख्यालय परिक्षेत्र उपस्थित थे। मध्यप्रदेश परिमंडल के समस्त संभागीय प्रमुखों एवं परिमंडल एवं क्षेत्रीय कार्यालय समस्त अधिकारियों ने अल्पविराम कार्यक्रम का लाभ उठाया ।

स्वस्थ जीवन, सबसे बड़ा धन है! इसी प्रेरणादायक उद्देश्य को चरितार्थ करने हेतु दिनांक 29.05.2024 एवं 30.05.2024 को मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश डाक परिमंडल एवं निदेशक डाक सेवाएँ (मुख्यालय) के मार्गदर्शन में म.प्र. परिमंडल कार्यालय के प्रांगण में प्रातः कालीन ऐरोबिक सत्र आयोजित किया गया जिसमें मुख्यालय परिक्षेत्र के समस्त संभागीय प्रमुख, अधिकारी एवं परिमंडल कार्यालय के अधिकारी–कर्मचारी सम्मिलित हुए।

झलकियाँ

प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसका उद्‌घाटन माननीय श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, मध्यप्रदेश परिमंडल द्वारा किया गया। इस अवसर पर परिमंडल कार्यालय से सहायक संभागीय प्रबंधक श्री एस के पांडे, प्रवर अधीक्षक डाकघर भोपाल श्री जे. एस. राजपूत एवं विभाग के अन्य अधिकारी, फिलैटलिस्ट गणमान्य नागरिक एवं स्कूली छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित हुये। कार्यक्रम में भारत की सांस्कृतिक विरासत पर एक लिखित क्विज प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें छात्रों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर बच्चों के द्वारा फिलैटेलिक ब्यूरो का भी भ्रमण किया गया एवं डाक टिकटों के सतरंगी संसार का अध्ययन किया गया।

परिक्षेत्रीय कार्यालय जबलपुर के नर्मदा सभागार में माननीय श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, म.प्र. परिमंडल द्वारा बैलेंसिंग रॉक जबलपुर पर एक विशेष आवरण का विमोचन किया गया। उक्त कार्यक्रम में श्री ब्रजेश कुमार, पोस्टमास्टर जनरल जबलपुर परिक्षेत्र, श्री अजेय सिंह, निदेशक डाक सेवाएं जबलपुर परिक्षेत्र एवं संभाग के संभागीय प्रमुखों के साथ–साथ कर्मचारियों की भी उपस्थिति रही।

झलकियाँ

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर दिनांक 31.08.2024 को टी टी नगर स्टेडियम में फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश श्री विनीत माथुर ने किया इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि के रूप में माननीय निदेशक खेल एवम युवा कल्याण मध्यप्रदेश श्री रवि कुमार गुप्ता, तथा निदेशक डाक सेवाएं श्री पवन कुमार डालमिया मध्य प्रदेश उपस्थित रहे। जिसमें कार्यालय प्रवर अधीक्षक डाकघर, भोपाल की टीम विजेता एवं कार्यालय महाप्रबंधक वित्त की टीम उपविजेता रही ।

इंडिया पोस्ट पेमेन्ट बैंक के 7वें स्थापना दिवस पर दिनाक 31.08.2024 को से.टी.टी. नगर प्रधान डाकघर में आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमण्डल द्वारा डाक विभाग की अल्प बचत योजनाओं के लगभग 1.40 करोड लाभार्थियों के खातों के बैलेंस की जानकारी हेतु क्यूआर का विमोचन किया गया ।

78वें स्वतंत्रा दिवस के पावन अवसर पर म.प्र. परिमंडल कार्यालय, डाक भवन, भोपाल में माननीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल महोदय द्वारा ध्वजारोहण कर सभी अधिकारियों–कर्मचारियों को स्वतंत्रा दिवस 2024 की शुभकामनायें दी गयीं एवं माननीय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल महोदय एवं निदेशक डाक सेवाएं (मुख्या.) परिक्षेत्र द्वारा "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण किया गया।

झलकियाँ

भारतीय डाक विभाग गुना डाक संभाग के द्वारा मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्य प्रदेश परिमंडल विनीत माथुर जी के मुख्य आतिथ्य में प्रोजेक्ट "अंकुर" का शुभारंभ किया गया । प्रोजेक्ट अंकुर ग्रामीण डाक सेवकों के व्यक्तित्व विकास हेतु प्रारंभ किया जा रहा जीडीएस मेंटरशिप प्रोग्राम है जिसमें उनके सर्वांगीण विकास, उनकी कार्य कुशलता, संवाद कौशल, ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए सतत प्रयास किए जाएंगे। इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत 80 से अधिक विभागीय कर्मचारियों के द्वारा संभाग के युवा जीडीएस साथियों की मेंटरिंग करने का कार्य किया जायेगा। जिससे ग्रामीण क्षेत्र में भारत सरकार की योजनाओं के प्रचार प्रसार को प्रभावी और कारगर बनाने में सहायता मिलेगी ।

दिनांक 05.07.2024 को परिमंडल कार्यालय के सभागार में आदरणीय श्री विनीत माथुर, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, म.प्र. परिमंडल द्वारा बचत बैंक, पीएलआई, आरपीएलआई, आईपीपीबी के क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य करने वाले अधिकारियों कर्मचारियों को सम्मानित किया गया ।

झलकियाँ

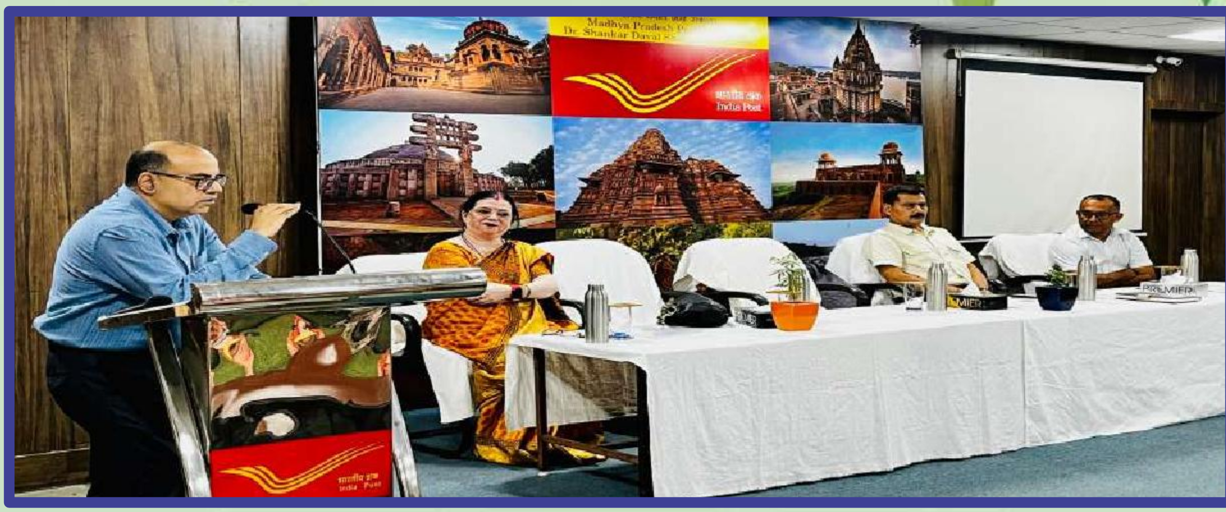

कार्यालय मुख्य पोस्टमास्टर जनरल मध्यप्रदेश परिमंडल में हिन्दी पखवाडा 2024 के दौरान वाद–विवाद, नारा, हिन्दी टंकण, श्रुतलेख/पत्रलेखन, प्रश्न मंच, वर्ग पहेली, हिन्दी कार्यशाला, सार लेखन एवं तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया गया।

श्रीमती रोमा मनवानी पेसवानी
अनुभाग पर्यवेक्षक (मेल्स), परिमंडल कार्यालय भोपाल

मिलेट्स केक बनाने की विधि

सामग्री

1.	ओट्स पिसे हुये	–	02 कप
2.	रागी का आटा	–	01 कप
3.	ज्वार का आटा	–	01 कप
4.	चीनी पीसी हुयी	–	02 कप
5.	फ्रेश क्रीम	–	01 कप
6.	दूध	–	01 कप
7.	तेल	–	01 कप
8.	वनीला एसेंस	–	01 छोटा चम्मच
9.	बैंकिंग पावडर	–	02 छोटे चम्मच
10.	बैंकिंग सोडा	–	एक चुटकी

विधि :

01. ओटस, रागी का आटा, ज्वार का आटा मिला ले, साथ ही बैंक्रृकग पावडर एवं बैंक्रृकग सोडा मिला ले ।

02. मिक्सर में फेश क्रीम फेट ले, फिर इसमे चीनी पावडर, तेल भी मिक्स करे ले ।

03. क्र. 01 पर लिखे हुये मिश्रण को क्र. 02 के साथ मिक्स कर ले एवं उसमे धीरे धीरे दूध डालते जाए ।

04. अब तैयार मिश्रण में वनीला एसेंस डाल दे, रुचि अनुसार टूटी–फ्रूटी, चोको चिप्स डाल दे ।

05. बेक्रृकग पोट में, मिश्रण को डालकर सुविधा अनुसार माइक्रोवेव या गैस वाले ओवन पर बेक करें । स्वादिष्ट एवं सेहत के लिए लाभप्रद मिलेट्स केक तैयार है ।

नोट : 01. चॉक्लेट फ्लेवर केक बनाने हेतु उपरोक्त मिश्रण के साथ) कप चोको पावडर एवं चोकलेट एसेंस का प्रयोग किया जा सकता है ।

02. उपरोक्त वर्णित मिलेट्स के अलावा रुचि अनुसार अन्य मिलेट्स का उपयोग कर सकते है ।

कलाकृति

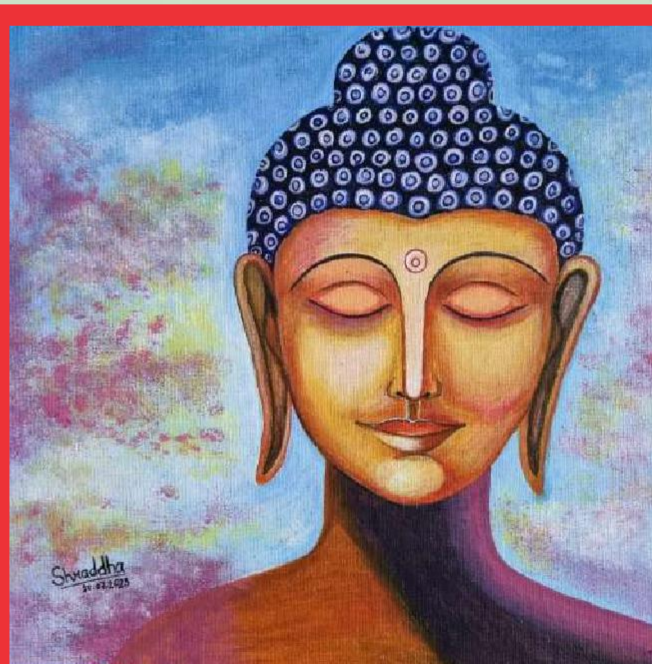

श्रद्धा साकेत
डाक सहायक, परिक्षेत्रीय कार्यालय, जबालपुर

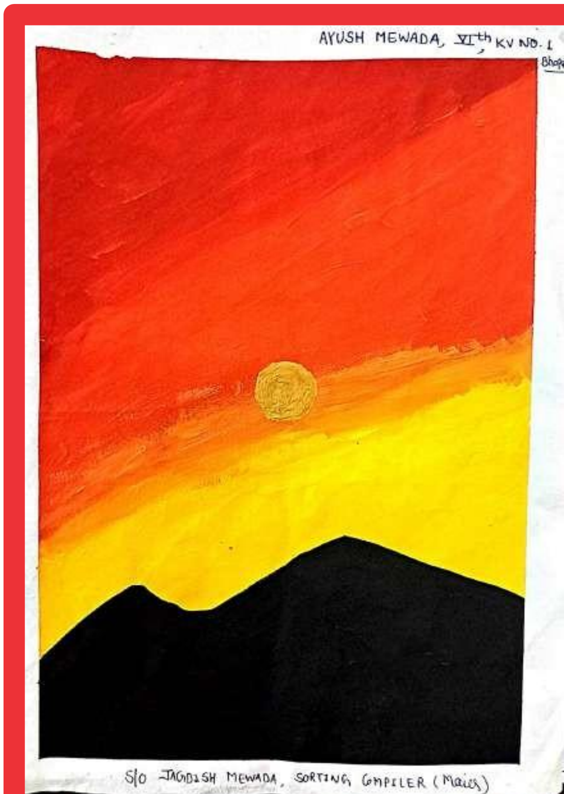

आयुष मेवाड़ा पुत्र श्री जगदीश मेवाड़ा
सोर्टिंग कंम्पायलर, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

कलाकृति

आरती गेड़ा
डाक सहायक, बजट अनुभाग, परिमंडल कार्यालय, भोपाल

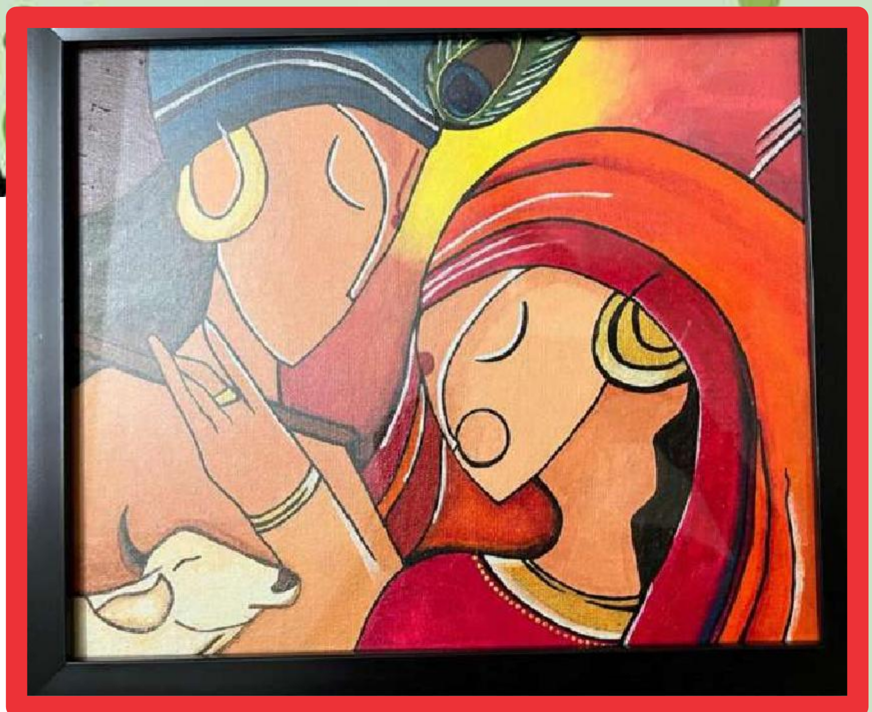

कलाकृति

शिवांगी गुप्ता
आशुलिपिक
परिमंडल कार्यालय, भोपाल